Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लेखन और प्रतिलेखन में पंजाबी संगीतज्ञों का योगदान

DR. RAMANDEEP KAUR
Assistant Professor, Guru Kashi University, Talwandi Sabo

सार: *संगीत में ऐसी अवधारणा रही है कि सैद्धांतिक और किर्यात्मक दोनों अलग-अलग क्षेत्र हैं और इन दोनों क्षेत्रों के विद्वान भी अलग-अलग रहे हैं, इस धारणा को बदलने के लिए पंडित विष्णु नारायण भातखंडे और विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षण को संगीत शिक्षा के रूप में प्रवर्तित करते हुए संगीत के संस्थागत शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। परिणामस्वरूप संगीत शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन स्वाभाविक था। संगीत शिक्षा में जहाँ अनेक सुविधाएँ उपलब्ध थीं, वहीं समय-सीमा निश्चित होने के कारण समूह शिक्षण प्रणाली प्रचलित हो गयी। परिणामस्वरूप, गुणवत्ता का स्थान गिनात्मकता ने ले लिया, जो समय के साथ एक बड़ी चुनौती बन गई। भातखंडे और पलुसकर जैसे विद्वानों ने इस चुनौती को स्वीकार किया और संगीत प्रेमियों और छात्रों को सराहना देने के लिए अपने ज्ञान को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया। इस कार्य के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत विषय पर पुस्तकों का भी प्रकाशन शुरू हुआ ताकि संस्थागत शिक्षा प्रणाली को सुचारू रूप से चलाया जा सके। क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत विषय पर पुस्तकों का प्रकाशन पंजाब के संगीतकारों द्वारा भी कुशलतापूर्वक किया गया| पंजाबी विद्वानों और संगीतकारों द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में किये गये पुस्तकों के प्रकाशन व् पुस्तक विवेचन इस शोध पत्र का मुख्य उदेश्य है|*

कुंजी शब्द: *संगीत, प्रकाशन, पंजाबी विद्वान, सिधान्तिक, किर्यात्मक*

भूमिका

भारतीय परंपरा में संगीत को गुरुमुखी विद्या का स्थान प्राप्त है। प्रारंभ से ही संगीत की शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार दी जाती रही है जिसमें संगीत के किर्यात्मक पक्ष की प्रधानता रही है। बेशक, संगीत एक कार्यात्मक कला है, लेकिन सैद्धांतिक पक्ष के बिना भी, संगीत की पहचान खोने का डर है। संगीत में ऐसी अवधारणा रही है कि सैद्धांतिक और किर्यात्मक दोनों अलग-अलग क्षेत्र हैं और इन दोनों क्षेत्रों के विद्वान भी अलग-अलग रहे हैं, इस धारणा को बदलने के लिए पंडित विष्णु नारायण भातखंडे और विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षण को संगीत शिक्षा के रूप में प्रवर्तित करते हुए संगीत के संस्थागत शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। परिणामस्वरूप संगीत शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन स्वाभाविक था। संगीत शिक्षा में जहाँ अनेक सुविधाएँ उपलब्ध थीं, वहीं समय-सीमा निश्चित होने के कारण समूह शिक्षण प्रणाली प्रचलित हो गयी। परिणामस्वरूप, गुणवत्ता का स्थान गिनात्मकता ने ले लिया, जो समय के साथ एक बड़ी चुनौती बन गई। भातखंडे और पलुसकर जैसे विद्वानों ने इस चुनौती को स्वीकार किया और संगीत प्रेमियों और छात्रों को सराहना देने के लिए अपने ज्ञान को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया। इस कार्य के बाद क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत विषय पर पुस्तकों का भी प्रकाशन शुरू हुआ ताकि संस्थागत शिक्षा प्रणाली को सुचारू रूप से चलाया जा सके।

पंजाब की शास्त्रीय संगीत परंपरा को विलक्षण देन है| क्षेत्रीय भाषाओं में संगीत विषय पर पुस्तकों का भी प्रकाशन पंजाब के संगीतकारों द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया| पंजाबी विद्वानों और संगीतकारों द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में पुस्तकों के के प्रकाशन के साथ, पंजाबी और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपरा तीन प्रकार से उभरी है:

1. पंजाब की शास्त्रीय संगीत परंपरा की विशेषताएँ और हिंदुस्तानी संगीत में योगदान।
2. पंजाब के संगीतकारों का इसमें योगदान।
3. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं का पंजाबी भाषा में प्रतिलेखन।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रकाशन में प्रो. तारा सिंह की पुस्तक **वादन कला (1972)** पंजाबी भाषा में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रकाशन पर पहली मूल पुस्तकों में से एक है। वादन कला पुस्तक का नाम यद्यपि वादन संगीत से संबंधित है, परंतु पुस्तक की विषयवस्तु संगीत की दोनों धाराओं (गायन एवं वादन) से संबंधित है। पुस्तक में भारतीय संगीत के इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध है। इस पुस्तक से पहले, पंजाबी भाषा के संगीत प्रकाशन मूल रूप से गुरमति संगीत परम्परा के अनुसार प्रकाशित होते थे, गुरमति संगीत प्रकाशन के क्षेत्र

में भी प्रो. तारा सिंह का नाम विशेष रूप से वर्णनयोग्य है।1 आप ने संगीत पाठकों को **'सितार तरंगणी'** और **'रबैअती अते आधुनिक साज'** नामक पुस्तकों से अवगत करवाया|

पंजाब दे प्रसिद्ध संगीतकार (1983) भाषा विभाग पंजाब द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक पंजाबियों के संगीत प्रति दिए गये योगदान को दर्शाने का प्रो. तारा सिंह का पहला प्रयास था। पहली बार इस पुस्तक में पंजाब के संगीतकारों का जीवन विवरण संकलित किया गया है। उन्होंने इस पुस्तक में संगीत प्रणालियों, गायन शैलियों और संगीत के क्षेत्र में पंजाबियों के योगदान पर निबंध प्रकाशित किए हैं।2

पंजाबी संगीतकार (1989) डा. गुरनाम सिंह की रचना है| इस पुस्तक द्वारा लेखक ने भारतीय संगीत में पंजाबी संगीतकारों के योगदान से परिचित करवाया है। लेखक ने पंजाब के नामकरण, पंजाबी सभ्यता और पंजाबियों की जुझारूपन भावना का उल्लेख करते हुए इस तथ्य की पुष्टि की है कि आक्रांताओं के हमलों से प्रभावित पंजाबी अपने संगीत को संरक्षित करने में कुछ हद तक सफल नहीं हो सके हैं।3 लेखक ने पंजाबियों की मार्शल प्रकृति के साथ-साथ संगीत जैसी सौम्य कला को संरक्षित करने के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख किया है। संगीत के सैद्धांतिक पक्ष में ऐसे उपेक्षित विषयों को उजागर करना लेखक का सराहनीय प्रयास है। गुरमति संगीत के संगीत महत्व को समझाने के अलावा, लेखक ने पुस्तक में भारतीय संगीत की ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, काफी, दादरा, ग़ज़ल और कव्वाली गायन शैलियों के इतिहास और विकास का भी परिचय दिया है। इस पुस्तक में पंजाबी संगीतकारों को तीन श्रेणियों (गायक, वादक और संगीतकार) में बांटा गया है। पुस्तक में कुछ ऐसे विद्वान कलाकारों का परिचय दिया गया है जो पंजाबी संगीत की मूल विरासत से तो जुड़े रहे हैं लेकिन ऐतिहासिक पहचान से वंचित रहे हैं।4

संगीत प्रकाश (1980) पुस्तक भारतीय संगीत के प्रख्यात विद्वान पंडित हरिश्चंद्र बाली की रचना है, जिसे 1980 में पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी टेक्स्ट बुक बोर्ड, चंडीगढ़ द्वारा प्रकाशित किया गया था। पुस्तक के प्रकाशन के समय, भारतीय संगीत में पंजाबी भाषा की किताबें की संख्या बहुत कम थीं और संगीत को एक स्वतंत्र विषय के रूप में शैक्षणिक संस्थानों में लागू किया जा चूका था। ऐसे समय में पंजाबी भाषाई संगीत पुस्तकों की कमी को महसूस करते हुए, पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी टेक्स्ट बुक बोर्ड चंडीगढ़ ने संगीत के इन महान लेखकों द्वारा पंजाबी भाषा की संगीत पुस्तकें लिखवाकर संगीत के छात्रों के लिए संगीत पाठ्यक्रम के अध्ययन को आसान बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए|

संगीत ग्रंथ अते भारती संगीत दा इतिहास (1982) पुस्तक श्रीमती चंद्र कांता खोसला की रचना है जिसको 1982 में पंजाब यूनिवर्सिटी टेक्स्ट बुक बोर्ड, चंडीगढ़ द्वारा प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक भी उस समय लिखी गई थी जब संगीत के विषय पर पंजाबी भाषा के प्रकाशनों की कमी थी। पुस्तिका में कुल सात अध्याय हैं। कुछ विशेष कारणवस यह पुस्तक पुनः प्रकाशित नहीं हो सकी।

पंजाब विच संगीत कला दा निकास अते विकास (1986) पुस्तक पन्ना लाल मदान की कलम का सिंगार बनी। यह पुस्तक 1986 में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित की गई थी।5 यह पुस्तक मुख्य रूप से हिंदुस्तानी संगीत में पंजाबियों के योगदान का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इस पुस्तक में कई संगीतकारों की विस्तृत जीवनियाँ हैं, जिनमें से अधिकांश पंजाबी संगीतकार हैं। यदि हम पुस्तक को प्रासंगिकता की दृष्टि से देखें तो लेखक ने पंजाब की संगीत पृष्ठभूमि के बारे में बहुत ही संक्षिप्त परंतु प्रभावी तरीके से जानने का प्रयास किया है। इस पुस्तक में प्रयुक्त सामग्री ऐतिहासिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से संतुलित है।

1986 में डॉ. नवजोत कौर कसेल द्वारा **पंजाब दा संगीत** नाम से एक पुस्तक और **प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद अब्दाल हलीम जफर खान** (2016) की जीवनी और संगीत योगदान पर आधारित पुस्तक लिखी ।

भारती संगीत दा इतिहास (1998) पुस्तक योगेन्द्रपाल शर्मा और बचित्तर सिंह द्वारा लिखी गई| इस पुस्तक की मूल विशेषता ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या है। इस पुस्तक में संगीतक इतिहास को ऐतिहासिक कालखंडों के क्रम के अनुसार विभाजित करके प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक की भाषा शैली अत्यंत सरल एवं शुद्ध पंजाबी है। यदि हम पुस्तक को प्रासंगिकता की दृष्टि से पढ़ें तो

इस पुस्तक में भारतीय संगीत के इतिहास के बारे में जो जानकारी दी गई है, वह पहले ही भारतीय संगीत की हिंदी भाषा की पुस्तक में इन कालखंडों के इतिहास के बारे में विस्तार से दर्शाई जा चुकी है। इस पुस्तक का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक अन्य भाषाओं की संगीत की ऐतिहासिक पुस्तकों का पंजाबी भाषा में अनुवाद मात्र है।

इसके अलावा कुछ पुस्तकें निबंध रूप में भी रची गई, जिनमें **उचेरे संगीत निबन्ध** (1984) के लेखक डॉ. दर्शन सिंह नरूला, **संगीत निबंध (1988)** डॉ. विनय कुमार अग्रवाल, **संगीत निबन्धावली (1991)** डा. गुरनाम सिंह आदि प्रमुख हैं|

डॉ. दर्शन सिंह नरूला का संगीत के सैद्धांतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। आपकी लगभग 15 पुस्तकें विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रकाशित पुस्तकों में **गुरु नानक संगीतज्ञ** (हिंदी) न्यू बुक कंपनी, जालंधर 1978, **सिख गुरुओं की भारतीय संगीत को देन (हिंदी)** भाषा विभाग पंजाब पटियाला 1978, **उचेरे संगीत, निबंध,** लिटरेचर हाउस, अमृतसर 1984, राग तुलना, लोक सभ्याचारक मंच, मलोट 1985।, **गुरबानी संगीत बारे (एक अध्ययन)** गुरमति स्टडी सर्कल मलोट 1985।, **संगीत विचारधारा**, लिटरेचर हाउस, अमृतसर 1986, **संगीत स्मीख्या,** लिटरेचर हाउस , अमृतसर 1987, **संगीत चिंतन**, लिटरेचर हाउस, अमृतसर 1988, **विष्णु दिगंबर पलुस्कर (जीवनी)** एनसीईआरटी नई दिल्ली 1994, **पंजाब दा संगीत विरसा ते विकास,** पंजाबी राइटर्स सोसाइटी नई दिल्ली 1995, **गुरमति संगीत दा विकास**, म्यूजिक स्टडी सर्कल मलोट 1980, **गुरु नानक संगीतकार (पंजाबी)** गुरु नानक फाउंडेशन दिल्ली 1992, **संगीत शास्त्र त्रिवेणी**, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला आदि प्रमुख हैं।

संगीत रत्नावली पुस्तक श्रीमती सुरिंदर कपिला की कृति है जिसे 1988 में पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक दो भागों (संगीत रत्नावली गायन और संगीत रत्नावली शास्त्र पक्ष) में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक के सह-लेखक प्रो. तारा सिंह हैं। इन पुस्तकों में लेखक ने कुछ स्व-रचित बंदिशों को भी शामिल किया है, पुस्तक के मूल लेखक के साथ सह-लेखक के रूप में पिछली पीढ़ी के प्रमुख विद्वान का नाम होना तर्कसंगत नहीं लगता।

पंजाबी ख्याल रचनावली पुस्तक की रचना अजीत सिंह मुतलाशी और श्री बलदेव शरण नारंग ने की थी। इस पुस्तक में श्री बलदेव शरण नारंग द्वारा 41 रागों की मधुर रचनाओं को प्रकाशित रूप में संगीत पाठकों को अर्पित किया गया है। पुस्तक के प्रतिलेखन पंजाबी भाषा में प्रकाशित होने के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी अनुवादित किए गए हैं और पंजाबी भाषाई पाठकों के साथ-साथ गैर-पंजाबी पाठकों के लिए भी लाभकारी साबित हुए हैं।

गायन कला (1989) भाग दूजा पुस्तक श्रीमती देविंदर कौर द्वारा रचित और 1989 में पंजाबी विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का प्रकाशन उस्ताद सोहन सिंह की देखरेख में शुरू हुआ। इसी शीर्षक से प्रकाशित अगली पुस्तक **गायन कला** (2001) के लेखक हैं डा. यशपाल शर्मा| इस पुस्तक को भी 2001 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने प्रकाशित किया। यह पुस्तक किर्यात्मक और व्यावहारिक पहलुओं से संबंधित पुस्तक के रूप संगीत के विद्यार्थियों के लिए अमूल्य खजाना है। पुस्तक में ठुमरी, टप्पा, चतुरंग, तराना, रागमाला, भारतीय संगीत शैली का विकास, भारतीय स्वर सप्तक का विकास, हिंदुस्तानी स्वरलिपि प्रणाली, जाति गायन, प्राचीन राग, लक्षण, राग-रागनी प्रणाली, गुरमत संगीत की परिभाषाएँ आदि महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं। गुरमत संगीत की परिभाषा की तरह, गुरमत संगीत की गायन शैलियाँ (अष्टपदी, पदे, पड़ताल, घोड़िया, वार, बारहमाह) पुस्तक का श्रंगार हैं। इस पुस्तक में कुछ रागों के पारंपरिक बंदिशों को भी लिपिबद्ध किया गया है।

संगीत शास्त्र अते गायन विधि (1998) पुस्तक की रचना तीन लेखकों श्री अनिल नरूला, श्री गुरप्रताप सिंह गिल और श्रीमती देविंदर कौर ने की। इस पुस्तक के तीनों लेखक संगीत विषय के शिक्षण से जुड़े प्रतिष्ठित विद्वान हैं। यह पुस्तक 1998 में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित की गई| यह पुस्तक संगीत विषय के बी.ए. भाग III के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

बलबीर सिंह कंवल, जो वर्तमान में इंग्लैंड में रहए हुए भारतीय संगीत परंपरा पर गहन शोध कर रहे हैं। बलबीर सिंह कंवल का भारतीय शास्त्रीय संगीत परम्परा पर किया गया कार्य हमारी संगीत विरासत को बनाए रखने में मदद करेगा। उनके संगीत कार्यों में, **'पंजाब दे प्रसिद्ध रागी रबाबी' (2010)** प्रकाशित हुई जो गुरमत संगीत परंपरा के रागी रबाबी कीर्तनकारों के योगदान को प्रकाशमान करती है। पिछले चार सौ वर्षों में लगभग 100 रागियों, रबाबियों और संगीतकारों के जीवन और उपलब्धियों का विवरण इस पुस्तक को शिन्गारिक बनाती हैं| इसके बाद **'पंजाब दे संगीत घराने अते भारती संगीत परंपरा' (2017)** पुस्तक संगीत पाठकों के बीच लोकप्रिय हुई। इस पुस्तक में पंजाब के ध्रुपद और ख्याल संगीत घरानों, गायकों, तबला वादकों और सारंगी निवाज़ों पर विस्तार से चर्चा की गई है। **'पंजाब दियां प्रसिद्ध बाईयां और सज़िंदे' (2021)** हाल ही में प्रकाशित हुई है जिसमें महिला गायकों, सारंगी वादकों और तबला निवाज़ के संगीत दिग्गजों को शामिल किया गया है। उस समय समाज में तिरस्कृत महिलाओं के संगीत संबंधी योगदान पर प्रकाश डालना इस पुस्तक की खूबसूरती में चार चांद लगा देता है। इसके अलावा पुस्तक के दूसरे भाग में वीणा वादक, पेटी वादक, सितार वादक और तबला वादक शामिल हैं जिनके संगीतक योगदान को दर्शाया गया है। उन्होंने सारंगी और तबला के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए उनके वाद्ययंत्रों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की है|

संगीत दी सिखया विच मनोवैज्ञानिक सिधान्त दा उपयोग (2010) नामक पुस्तक डॉ. देविंदर कौर की कृति हैं जिसे 2010 में पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक संगीत विषय से संबंधित एक अनूठी कृति है जिसमें लेखक ने संगीत शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रयोग को अनिवार्य रूप से अपनाने पर जोर दिया है। मनोवैज्ञानिक आधार पर दी जाने वाली शिक्षा की प्रभावशीलता को मापने के लिए वर्तमान में उपयोग में लाई जा रही अनेक विधियों तथा कार्ययोजना की सफलता का उल्लेख इस पुस्तक को और अधिक प्रासंगिक बनाता है जो वर्तमान समय की आवश्यकता भी है। आप दी कलम से **संगीत रूप** पुस्तक बी.ए संगीत के छात्रों के लिए बहुत प्रभावशाली साबित हुई। **संगीत सिखया** (2010) पुस्तक डॉ. जोगिंदर सिंह बावरा की रचना है जिसको 2010 में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया। बी.एड में संगीत विषय के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक प्रकाशित की गई। 2013 में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित संस्थागत संगीत सिखया पुस्तक डॉ. देविंदर कौर द्वारा लिखी गयी| संस्थागत संगीत शिक्षा-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और संस्थागत संगीत शिक्षा दार्शनिक परिप्रेक्ष्य नामक दो भागों में यह पुस्तक प्रकाशित हुई। पंजाबी भाषा में इससे पहले संगीत की संस्थागत शिक्षा प्रणाली में कोई भी पुस्तक उपलब्ध नही थी| इस पुस्तक के माध्यम से, संगीत छात्र संस्थागत संगीत शिक्षा के ऐतिहासिक और दार्शनिक अवलोकन के बारे में जान सकते हैं। पुस्तक का अंतिम भाग संस्थागत संगीत शिक्षा के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सुझावों से भरा है जिनसे आज के संगीत पाठकों और विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन मिल सकता है। ऐसी रचनाएँ संस्थागत संगीत शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित हो सकती हैं।

गायन बंदशावली (1999) पुस्तक डॉ. गुरनाम सिंह द्वारा लिखित और 1999 में पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित की गई थी। पुस्तक की संपूर्ण सामग्री संगीत के कार्यात्मक पक्ष से संबंधित है। इस पुस्तक की शुरुआत में, एक परिचय के रूप में, पटियाला घराने से जुड़े कई पंजाबी संगीतकारों की बंदिशों को शामिल किया गया है। लेखक ने राग और बंदिश के बीच संबंध और बंदिश की श्रेष्ठता नामक विषयों के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए हैं। पंजाबी संगीतकारों द्वारा रचित पंजाबी भाषा की बंदिशें पुस्तक को और भी शिन्गारिक बनाती हैं, जिसमें पंजाबी संगीतकारों द्वारा हिंदुस्तानी संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए प्रयासों की झलक देखी जा सकती है। **पंजाबी भाषाई शास्त्री गायन बंदिशां** (1999) की रचना भी डा. गुरनाम सिंह ने की| यह पुस्तक 1999 में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित की गई। यह पुस्तक संगीत जगत और पंजाबी काव्य जगत के लिए एक विशिष्ट पुस्तक है। लेखक ने विभिन्न स्रोतों और कलाकारों, रचनाकारों से पंजाबी गायन प्राप्त करके उन्हें लिपिबद्ध किया है और एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में शास्त्रीय संगीत की पंजाबी भाषा की सामग्री संकलित की गई है। पुस्तक का मूल आधार ख्याल गायन ही है, जिसमें सदारंग, अदारंग, मनारंग, गुलाम नबी शोरी, काले खान, नाथ जी बटाले आदि कलाकारों की कुल 139 पंजाबी शास्त्रीय गायन बंदिशें हैं| पंजाबी शास्त्रीय गायन बंदिशों की पुस्तक में सभी बंदिशें पंजाबी भाषा में लिखी गई हैं।

डॉ. हरजस कौर ने **भारती शास्त्री संगीत अते गुरमति संगीत (2015)** नामक एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें मध्ययुगीन भारतीय शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि से गुरमति संगीत की महान परंपरा का बहुत ही प्रभावशाली तरीके से उल्लेख किया गया है। पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा प्रकाशित डा. राजेश शर्मा द्वारा लिखित **हवेली संगीत परंपरा (2019)** नामक पुस्तक पंजाबी भाषा में हवेली संगीत परंपरा पर पहला कार्य है। इस पुस्तक में भक्ति संगीत-वैष्णव संप्रदाय, हवेली संगीत का जन्म और विकास, हवेली संगीत के हस्तस्खा का संगीत और साहित्यिक रूप, हवेली संगीत की कीर्तन परंपरा, हवेली संगीत परंपरा के संगीत तत्व, हवेली संगीत और समकालीन वैष्णव परंपराएं: अंतर्संबंध, आदि विषय को छुआ गया है।

संपादित पुस्तकों के बारे में बात करते हुए, **हिंदुस्तानी संगीत: विभिन्न परिपेख** (2009), **पड़ताल गायकी, गुरु नानक देव राग रत्नावली, प्रोफेसर तारा सिंह सिमरती ग्रंथ** पुस्तकों के अनुवादक और संपादक डा. अलंकार सिंह हैं| डा. दर्शन सिंह नरूला द्वारा अनुवादित **संगीत शास्त्र त्रिवेणी (2011)** पुस्तक में भारतीय संगीत के तीन महत्वपूर्ण ग्रंथों (अभिनवरागमंजरी, उत्तर भारतीय संगीत: एक सर्वेक्षण और सुरमेलकलानिधि) का पंजाबी भाषा में अनुवाद किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान विद्वानों की कृतियों का पंजाबी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन करना पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला की एक महत्वपूर्ण पहल है। उम्मीद है कि भविष्य में अन्य लेखकों द्वारा भी इसी तरह के प्रकाशन प्रकाशित किए जाएंगे।

374 पृष्ठों की **'सुर सरगम'** नामक पुस्तक के लेखक डा. विजय परवीन डी.ए.वी कॉलेज जलालाबाद के संगीत विभाग के प्रमुख हैं, जिन्हें संगीत गायन और वादन दोनों में विशेषज्ञता हासिल है। पुस्तक की समग्र सामग्री संक्षिप्त लेकिन प्रभावी है। मसनवी, क़ासिदा, मार्सिहा, रुबाई, गीत आदि गायन शैलियाँ सबसे पहले किसी पुस्तक में पढ़ने के लिए प्राप्त हुई। संगीत के अनेक उपेक्षित विषयों को निबंध के रूप में पुस्तक में प्रकाशित करना अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य है।

भारती संगीत: विभिन्न परिपेख (2014) पुस्तक डॉ. रिशपाल सिंह की रचना है| इस पुस्तक में संगीत की विभिन्न परिभाषाओं के साथ-साथ विभिन्न दृष्टिकोणों से संगीत का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अलावा आप ने **ट्रांसफॉर्मेशन इन म्यूजिक एंड म्यूजिक एजुकेशन (अंग्रेजी), संगीत अते संगीत विच परिवर्तन (पंजाबी), संगीत और संगीत शिक्षा में परिवर्तन (हिंदी) और त्रिवेणी** नामक चार पुस्तकों का संपादन किया। संगीत कला के प्रचार पसार हेतु 'त्रिवेणी संगीतक खोज पत्रिका' नाम से एक अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन शोध पत्रिका चला रहे हैं जिसमें संगीत कला के प्रतिष्ठित लेखकों और शोधकर्ताओं के शोध पत्र प्रकाशित होते हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पस्ट होता है कि पंजाब के संगीत विद्वानों और संगीतकारों ने जहाँ संगीत के किर्यात्म्क पक्ष को प्रसारित करने में उलेखनीय योगदान दिया वहीँ संगीत कला के सिधान्तिक पक्ष में संगीत के गूढ़ रह्स्यों को कलमबद्ध करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया| अब तक बड़ी संख्या में पुस्तकें प्राप्त होना संतोषप्रद है, जो संगीत पाठकों के लिए एक अच्छा संकेत है। निःसंदेह ये पुस्तकें आने वाली पीढ़ियों के लिए न केवल प्रकाश पुंज सिद्ध होंगी बल्कि आगे के कार्यों के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करेंगी।

संदर्भ

1. प्रो. तारा सिंह, वादन कला, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, 1972, आदिका
2. रिशपाल सिंह, पंजाबी भाषाई संगीतक पुस्तकाँ: सार्थकता अते संभावनावा, (शोध प्रबंध), प्र-69
3. रिशपाल सिंह, पंजाबी भाषाई संगीतक पुस्तकाँ: सार्थकता अते संभावनावा, (शोध प्रबंध), प्र-83
4. रिशपाल सिंह, पंजाबी भाषाई संगीतक पुस्तकाँ: सार्थकता अते संभावनावा, (शोध प्रबंध), प्र-69
5. पन्ना लाल मदन, पंजाब विच संगीत कला दा निकास अते विकास, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, 1986